हौसले हों बुलंद तो मंजिल दूर नहीं

आरएम विशाखा कॉरपोरेट जगत का जाना-पहचाना नाम हैं। उनकी शख्सियत ऐसी है कि कोई भी उनका कायल हो जाए। दक्षिण भारत में जन्मी विशाखा गजब की हिन्दी बोलती हैं, साधारण सी वेशभूषा है उनकी। वो एक सफल मां, पत्नी और बिजनेस वुमन हैं। जीवन के लगभग हर पड़ाव पर उन्होंने सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विशाखा की सफलता की कहानी साझा कर रही हैं आरती मिश्रा

हैदराबाद के मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मी विशाखा कैनरा एचएसबीसी ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स लाइफ इंश्योरेंस कंपनी की सेल्स व मार्केटिंग डिपार्टमेंट की प्रमुख हैं। अपने 26 साल के लंबे करियर में अब तक विशाखा ने कई संस्थानों में काम किया है।

मां के दिए संस्कारों से मिली है सफलता

अपने तीन भाई-बहनों में विशाखा दूसरे नंबर की हैं। बचपन को याद करते हुए वे कहती हैं, 'मेरी पहली शिक्षक मेरी मां हैं। उन्होंने मुझे जो संस्कार दिए उनसे ही मैं जीवन में आगे बढ़ सकी हूं। जब-जब भी मैं कमजोर पड़ी तब मेरी मां ने ही मुझे फिर उठ खड़े होने की प्रेरणा दी।' विशाखा ने बी.कॉम और फिर सीए किया। पहली नौकरी बतौर अकाउंट ऑफिसर शुरू की। तब उन्होंने सोचा भी नहीं था कि वे मार्केटिंग या सेल्स में कुछ कर सकेंगी। विशाखा बताती हैं, 'मैं हमेशा से कुछ अलग करना चाहती थी। एक दिन मेरे ऑफिस के सेल्स मैनेजर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं सेल्स में काम करना चाहूंगी। तब से सेल्स का सिलसिला आरंभ हुआ। इस फील्ड में आकर मैंने जाना कि महिलाएं ज्यादा बेहतर तरीके से प्रबंधन कर सकती हैं। बस, उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाला कोई मिलना चाहिए।'

हर क्षेत्र में आगे बढ़े महिलाएं

विशाखा चाहती हैं कि महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आएं। वे अपने ऑफिस में भी महिलाओं को प्राथमिकता देती हैं। उनके स्टाफ में 30 फीसदी से अधिक महिला कर्मचारी हैं। ऐसा नहीं है कि विशाखा के लिए यह सफर काफी आसान रहा है। दूसरी महिलाओं की तरह उन्हें भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। घर-परिवार की जिम्मेदारी और ऑफिस के काम के बीच तालमेल बिठाना कोई आसान काम नहीं है। वे बताती हैं, 'कॉरपोरेट में काम करने वाली महिलाओं की परेशानियों को अक्सर पुरुष सहकर्मी नहीं समझते। अगर कोई महिला कर्मचारी बच्चा बीमार होने या किसी समारोह में जाने की बात कहती है तो उसे बहाना समझा जाता है, जबकि किसी पुरुष की गाड़ी खराब होने से उसके लेट होने पर कोई कुछ नहीं कहता। सब उसकी परेशानी समझते हैं। इस तरह की कई चुनौतियां महिलाओं के सामने आती हैं। लेकिन अगर ऐसा हो रहा है तो उसे नजरअंदाज करके अपना काम पूरी मेहनत से करना सफलता का मंत्र है। मेरी सफलता का पूरा श्रेय मैं अपनी मां और पति को देना चाहूंगी।'

विशाखा के दो बच्चे हैं। दोनों अब युवा हो चुके हैं। वे कहती हैं कि उनके ऑफिस में जो युवा काम करते हैं, वे उन्हें देखकर समझती हैं कि आजकल के बच्चे किस तरह का व्यवहार करते हैं और उन्हें क्या पसंद है और क्या नहीं। इससे उनके और बच्चों के बीच बेहतर तालमेल बना रहता है।

अपनी बात सामने रख रही है महिलाएं

आजकल जिस तरह से कार्यस्थलों पर महिलाओं के शोषण की बात सामने आ रही है, उसे विशाखा बदलाव का पर्याय मानती हैं। कार्यस्थल पर शोषण पहले भी होते थे। पर अपने भविष्य, नौकरी और नाम की चिंता के कारण महिलाएं इस बारे में मुखर नहीं होती थीं। जो चुपचाप सब कुछ सहने में विश्वास रखती थीं। पर, अब ऐसा नहीं है। वे कहती हैं, 'महिलाएं अब अपनी बात सामने रख रही हैं और यह सराहनीय बात है। शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद करनी ही चाहिए। काफी समय पहले मेरे सामने भी एक ऐसा वाकया आया था। उस समय मैंने तुरंत ही पीड़ित महिला का साथ देते हुए, पुरुष कर्मचारी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई और उसे अरेस्ट करवाया।' विशाखा कहती हैं कि जिंदगी हो या नौकरी, किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए जरूरी है कि आप अपने काम पर भरोसा रखें और जो करें, उसे पूरी मेहनत से करें।